



बरसा बादल

लेखक संजीव जैस्वाल

एक बादल बड़े मज़े से आकाश में इठलाता चला जा रहा था।
मोर ने कहा, “तुम बरसते क्यों नहीं? मैं तुम्हारे लिए नाचूँगा।”
मछली ने कहा, “कृपया बरसो। मुझे और पानी चाहिए।”
किसान ने कहा, “कृपया बरसो। मैं अगली फसल बोऊँगा।”
राजू ने कहा, “अगर तुम बरसोगे तो मैं कागज़ की नाव चलाऊँगा।”
बादल बरसे और बारिश की झड़ी लग गयी।
मोर ने अपने सुन्दर पंख फैला कर खूब नाचा।
तालाब भर गये। मछली खुश हो गयी।
किसान बीज बोने लगा।
छप-छपा-छप, छॉप! राजू ने अपने दोस्तों के संग डबरियों में खूब मौज मनायी।
बादल ने सबके दिलों को खुशी से भर दिया। वह आगे बढ़ चला। सब बच्चों
ने हाथ हिला-हिला कर उसे खुदाहाफ़िज़ कहा।

समाप्त

Click below to follow us:



You Tube

facebook



PRATHAM
BOOKS

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY
license by Pratham Books. Illustrated by Ajit Narayan.

